चंद्रयान की चमक से दमकता भारत का चेहरा

आलेख - राजेश बादल

हिन्दुस्तान के लिए अब चंदा मामा दूर के नहीं रहे। इसरो के वैज्ञानिकों और उनके सत्रह हजार सहयोगियों ने सोमवार को जिस पल अपने दूसरे चंद्रयान को छोड़ा - तो उनके लिए उस अहसास को शब्दों में बयान करना कठिन था। करीब 3 लाख 84 हजार किलोमीटर का फासला तय करके सितंबर के पहले हफ़्ते में जब इस यान का चाँद से संपर्क होगा, भारतीय तिरंगे की शान और बढ़ जाएगी। खास बात यह है कि दुनिया का कोई चंद्रयान पहली बार चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेगा। इस ध्रुव की कठिनाई यह है कि यहाँ चौदह दिन सूरज की किरणें नहीं पड़ती और पूरी तरह अँधेरा रहता है। इस कारण यहां ठंडक भी अधिक होती है। यहाँ की जमीन ऊबड़ खाबड़ है लेकिन पानी और जीवाश्म मिलने की संभावना है। इसके अलावा अनेक ज्वालामुखी फटने के संकेत भी चांद का यह इलाका दे रहा है। वैज्ञानिक कयास लगाते आए हैं कि किसी समय चक्र में यहाँ जीवन था और जीव जंतु विचरण करते थे, लेकिन ज्वालामुखी के फटने से विनाश हो गया। जीवाश्म याने फॉसिल्स इन्ही जीव जंतुओं की मौजूदगी को सुनिश्चित करते हैं। इसके अलावा वहाँ मैग्नीशियम-कैल्शियम खनिजों और लोहा धातु की उपस्थिति के बारे में चंद्रयान - 2 जाँच कार्य में सहायता कर सकता है।

चंद्रयान - दो पर खर्च होने वाली राशि चौंकाती है। सिर्फ 14.1 करोड़ डॉलर। सारे पश्चिमी और योरपीय देश हैरत में हैं क्योंकि अमेरिका के अपोलो अभियान में यह व्यय 25 अरब डॉलर था। जो मुल्क हमारे गरीब होने पर ताना देते थे कि भारत को यह हक नहीं है कि वह अंतरिक्ष कार्यक्रम पर अनाप-शनाप पैसा बहाए। वही देश आज भौंचक्के हैं। केवल हजार करोड़ रूपए से कम में हिन्दुस्तान चाँद पर पहुँच सकता है - उनकी कल्पना से परे है। भारत का यह उन्हें करारा उत्तर है। अपनी चादर की लंबाई के अनुसार हमें पैर पसारना आता है।

एक कड़वा दौर ऐसा भी आया था, जब अमेरिका ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम पर नाराजी दिखाई थी और सोवियत संघ के साथ मिलकर काम करने पर प्रतिबन्ध लगाने की धमकी दी थी। इस कारण रूस ने अपने पैर खींच लिए तो दो बरस के भीतर भारत ने स्वदेशी तकनीक का विकास कर संसार को अपनी वैज्ञानिक क्षमता का नमूना दिखा दिया था। ग्यारह साल पहले जब हिन्दुस्तान ने चंद्रयान - एक छोड़ा तो फिर किसी देश ने आँखें दिखाने का साहस नहीं किया। हमारा चंद्रयान - एक 312 दिन यात्रा पर रहा और उसकी कामयाबी सोमवार को चंद्रयान -दो के सफल प्रक्षेपण का आधार बन गई थी।

आपको याद होगा कि सत्तावन साल पहले 1962 में पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने विक्रम साराभाई को हिन्दुस्तान के अंतरिक्ष अभियान की कमान सौंपी थी तो विपक्ष ने भारी मखौल उड़ाया था। कहा गया था कि गरीबी और भुखमरी से जूझ रहे मुल्क के लिए दाना -पानी ज्यादा जरूरी है। नेहरूजी ने उत्तर दिया था - भूख से लड़ेंगे, गरीबी से लड़ेंगे और अंतरिक्ष में शान से भारत का तिरंगा भी लहराएँगे। कोई नहीं जानता था कि पहले

प्रधानमंत्री के उस संकल्प में क्या छिपा था। लेकिन यह साराभाई का कमाल था कि अगले साल ही 21 नवंबर को केरल के थुंबा से दो रॉकेट छोड़कर देश ने अंतरिक्ष युग में प्रवेश कर लिया था। इन रॉकेटों के कलपुर्जे बैलगाड़ियों और साइकलों से ढोकर ले जाए गए थे। दो चार देशों को छोड़ दें तो ज्यादातर विकसित देशों के लिए अंतरिक्ष में प्रक्षेपण एक सपने जैसा था। चार चाँद तो तब लगे, जब बारह बरस के अथक परिश्रम के बाद अप्रैल 1975 में पहला उपग्रह आर्यभट्ट और जून 1979 में दूसरा उपग्रह भास्कर छोड़ा गया। इसके बाद 18 जुलाई 1980 को जब रोहिणी उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किया तो सारे संसार में हिन्दुस्तान की अंतरिक्ष यात्रा के चर्चे थे।

हालांकि विश्व के विकसित देशों की आँखों में भारत काँटे की तरह चुभने लगा था। भारत के इतिहास में 18 अप्रैल 1984 का दिन कभी न भूलने वाला दिन है। उस दिन हिन्दुस्तान ने अंतरिक्ष में एक और छलांग लगाई।स्कवाड्रन लीडर राकेश शर्मा देश के पहले अंतरिक्ष यात्री बने। जिस पल उन्होंने प्रधानमंत्री इंदिराजी से अंतरिक्ष में बैठकर संवाद किया और कहा - सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा तो हर भारतीय के आँसू खुशी और गर्व से छलक पड़े थे । इसके बाद हमने पीछे मुडकर नहीं देखा। चंद्रयान के अलावा भारतीय मंगल मिशन को भी सारे संसार ने हैरत से देखा है। अनेक देशों के उपग्रहों को प्लेटफॉर्म देने वाला भारत आज अंतर्राष्ट्रीय उपग्रह उद्योग की पहली कतार में है **(इति)**।

(प्रस्तुतिः मनुज फीचर सर्विस)

नोट: विचार लेखक के अपने हैं, इन विचारों की जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय नहीं लेता।